समय का सदुपयोग

कालो अश्वो वहति ।

—अथर्व० १९।५३।१।।

(**कालः अश्वः**) समय-रूपी घोड़ा (**वहति**) दौड़ रहा है ।

दिन, रात, मास और वर्ष व्यतीत होते जा रहे हैं । समय भागता जा रहा है । आप इसके पीछे कितना ही दौड़ो, जो समय निकल गया सो निकल गया; अब वह वापस नहीं आ सकता। इसीलिए कहा है—

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं ।

खोया हुआ स्वास्थ्य पुनः लौटाया जा सकता है, धन-धान्य और वैभव पुनः प्राप्त किया जा सकता है, बिछुड़े हुए भाई-बन्धु फिर मिल सकते हैं, परन्तु गया हुआ समय फिर हाथ नहीं आता। अपनी आयु का एक-एक क्षण ज्ञानोपार्जन, विद्याभ्यास, वेदों के पठन-पाठन, प्रभु-चिन्तन तथा शुभ-कर्मों में लगा दो !

आज के काम को कल पर मत छोड़िए—

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
पल में प्रलय होयेगी, फेर करेगा कब ।।

प्रभु आपको बल और शक्ति प्रदान करें जिससे आप अपने समय का सदुपयोग करते हुए उन्नत हो सकें !

बोध-कथा

गृहस्थ धर्म का निर्वाह

एक बार सम्पन्न गृहस्थ दुकानदार स्वामी दयानन्द के पास पहुंचा । उनकी सेवा में हाथ जोड़कर बोला–''महाराज, मैं आपका एक पक्का भक्त हूं । मैं चाहता हूं कि मैं अपनी दुकान, कारोबार बेच दूं और उससे मिले दस हजार रुपये आर्यसमाज को दान दे दूं, जिससे आर्यसमाज का भव्य मन्दिर बन जाये ।''

स्वामी जी ने जिज्ञासा प्रकट की तुम्हारे घर-परिवार में कितने लोग हैं ? दुकानदार ने जवाब दिया मैं हूं, मेरी घरवाली है, दो बच्चे हैं, पर कमाने वाला मैं अकेला हूं, यह दुकान ही मेरी और मेरे परिवार की आय का साधन है ।

स्वामी जी ने उस भक्त दुकानदार को सचेत करते हुए कहा–''भले मानस, यह बात तो ठीक नहीं । तुम अपनी घर-गृहस्थी का सहारा दुकान बेच दोगो तो तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का कैसे काम चलेगा । तुम्हारा कर्त्तव्य है कि पहले तुम अपने परिवार के प्रति अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार से निबाहो । यदि तुम दान धर्म का निर्वाह करने के लिए गृहस्थी को दांव पर लगा दोगे तो गृहस्थ धर्म का निर्वाह कैसे हो सकेगा ।''

स्वामी जी ने व्यापारी गृहस्थ को सचेत करते हुए कहा–''तुम्हारी मानना का मैं सम्मान करता हूं, परन्तु तुम्हारा दस हजार रुपये देकर रोजगार खत्म कर देना ठीक नहीं, यदि तुम अपनी बचत के एक हजार रुपये ही संस्था को दान दो तो वह तुम्हारे, तुम्हारे परिवार और समाज सब के लिए ठीक हो सकेगा । मेरी सलाह तुम्हें यह ही है कि तुम रोजगार से मिलने वाले शेष रुपयों से अपने उसी रोजगार को मजबूत करो या किसी नये काम-धन्धे को अधिक मजबूत और पुख्ता करो, इसी में तुम्हारा और तुम्हारे गृहस्थ धर्म का पालन हो सकेगा ।''

–नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ४५, अंक ८ वार्षिक मूल्य : बीस रुपये मार्च १९९६

सम्पा॰ अजयकुमार आ॰ सम्पादक : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

जिज्ञासु के लिए उपनिषदों की सीख : ११

ब्रह्माण्ड और ब्रह्म के ज्ञान का विवेचन: श्वेताश्वतर उपनिषद् द्वारा

–नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वैदिक वाङ्मय एवं वैदिक विचारधारा को समझने में उपनिषदें सहायता करती हैं। इन ग्रन्थों के माध्यम से वेदों का गूढ़ रहस्यवादी सन्देश भली प्रकार समझा जाता है। वैसे मुक्तक उपनिषद् में १०८ उपनिषदों का उल्लेख है, परन्तु मुख्य लोकप्रिय उपनिषदें ११ ही हैं। ब्रह्माण्ड और ब्रह्म सरीखे गूढ़ रहस्यपूर्ण सिद्धान्त की व्याख्या इस ग्यारहवीं उपनिषद में इसी नाम के ऋषि श्वेताश्वतर ने प्रस्तुत की है।

एक बार एक आश्रम में जिज्ञासु ब्रह्मवादी एकत्र हुए। उन्होंने जिज्ञासा की कि इस सृष्टि ब्रह्माण्ड का कारण ब्रह्म है या कोई और कारण है? उन्होंने चिन्तन प्रस्तुत किया–हम लोग कहां से पैदा हुए? उनकी चर्चा का तीसरा विषय था–हम किस से जीते हैं, हम सब किस की सत्ता से जगत् की स्थिति दशा में जीवित रहते हैं ? और चौथी जिज्ञासा थी कि प्रलय की स्थिति में किस आधार पर हम सब रहते हैं ? इन ब्रह्मवादियों की चर्चा का पांचवां विषय था किस के निर्धारण में बंधे हुए हम सुख तथा दु:खों को भुगतते हैं ? हम सब ब्रह्मविद् ब्रह्मज्ञानी आप ऋषि की कृपा से इन सब जिज्ञासाओं, समस्याओं का समाधान करना चाहते हैं।

ओ३म् ब्रह्मवादिनो वदन्ति। किं कारणं ब्रह्म, कुतः स्म

जाता, जीवाम केन, क्व च संप्रतिष्ठा । अधिष्ठिताः केन, सुखेतरेषु वर्त्तामहे, ब्रह्मविदो व्यवस्थाम् ॥१॥

सृष्टि का कारण यदि ब्रह्म नहीं तो क्या काल (समय) स्वभाव, नियति (भाग्य) या ईश्वर की इच्छा है तो क्या पंच महाभूत कारण हैं? इन का संयोग कारण नहीं हो सकता क्योंकि ये सब जड़ हैं । **(स तु अनात्मभावात् ।)** अगर महाभूत कारण नहीं हैं तो क्या स्त्री-पुरुष कारण हैं ? ऋषि ने बतलाया–''सुख-दुःख होने के कारण स्त्री-पुरुष भी कारण नहीं हैं, वे कारण होते तो अपने को दुःख नहीं होने देते । **(आत्मा अपि अनीशः सुखदुःखहेतोः ।)** अर्थात् एक परमेश्वर ही सब का मूल कारण है, क्योंकि उसके विना काल, प्रकृति और जीवादि सब मिलकर भी सृष्टि नहीं बना सकते । चिन्तन से अनुभूति होती है । ध्यान योग से ब्रह्मवादियों को ज्ञात हुआ अपने गुणों की महत्ता के कारण परमेश्वर की दिव्य शक्ति अन्तर्लीन-निगूढ़ है। **(ते ध्यानयोग अनुगताः अपश्यन् देव-आत्मशक्तिं स्वगुणैः निगूढाम् ।)** सृष्टि-उत्पत्ति के ऊपर जितने कारण बतलाए गए हैं, उन सब में पहले कारण, समय काल से लेकर आखिरी आत्मा कारण तक उन सब को कौन-सी एकाकी व्यवस्था-अनुशासन में नियन्त्रित कर रही है । **(यः कारणानि निखिलानि तानि कालात्मयुक्तानि अधितिष्ठति एकः ।)**

जिस प्रकार एक रथ के पहिए में एक परिधि-नेमि होती है, उसी प्रकार ब्रह्म द्वारा संचालित सृष्टि रूपी चक्र में प्रकृतिरूपिणी नेमि है । जैसे रथ के पहिए में लोहे की पट्टी मढ़ी रहती है, वैसे इस सृष्टि-चक्र में भी सत्त्व, रज, तम इन तीन गुणों की पट्टी या लपेट हैं । ये तीन-तीन पट्टियां या लपेट प्रकृति पर चढ़े हुए हैं, १६ छोर वाले **(षोडशान्तम्)** ५० अरों वाले **(शतार्धारम्)** बीच की २० प्रत्यराओं से जुड़े हुए **(विंशतिप्रत्यराभिः)** आठ, आठ-आठ के समुदाय **(अष्टकैः)** छह गुच्छों से जटित **(षड्भिः)** काम रूप एक फांस वाले, तीन मार्गों के भेद वाले, उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय रूपी तीन मार्गों से चल रहा है । इस सृष्टि-चक्र के चलने से जीवात्मा के शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के कारण यह सृष्टि-चक्र चलता रहता है । सृष्टि-चक्र चलने का एक कारण और है–वह है मोह । **(एकनेमिम्, त्रिवृतम्, त्रिमार्गभेदम्, द्विनिमित्तम्, एकम् मोहम् ।)** जैसे रथचक्र किसी निमित्त से चलाया जाता है, उसी प्रकार यह सृष्टि-चक्र भी पाप-पुण्य या राग द्वेषादि द्वन्द्वों के फल भोगों के लिए चलाया जाता है । जिस प्रकार रथ चक्र में चिकनाई होती है, उसी प्रकार इस सृष्टि-चक्र में भी एक मोह नामक चिकनाई है ।

संसार को चक्रवत् घूमने वाला कह कर अब उस पिण्ड को

नदी के समान प्रवाहित होने वाला कहा है । वास्तव में संसार एक नदी के तुल्य है, जैसे नदी का जल पांच स्रोतों से प्रवाहित होता है, वैसे शरीर रूपी पांचों ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान रूपी जल प्रवाहित होता है। (**पञ्च स्रोतोऽम्बुं**) जैसे नदी के स्रोत का मूल पहाड़ होता है, वैसे शरीर रूपी नदी में पांचों महाभूत उसके उद्भव स्रोत हैं । जैसे नदी की गति कहीं उग्र, कहीं टेढ़ी (**पञ्चयोन्युग्रवक्राम्**) वैसे मानव-जीवन की प्रवृत्तियां कभी अधिक गतिशील तो कभी टेढ़ी-मेढ़ी हो जाती हैं। नदी की तरंगों की तरह शरीर रूपी नदी के पांचों प्राण ही उसकी तरंगों के समान हैं । (**पञ्चप्राणोर्मिम्** ।) नदी के आदि मूल स्रोत उद्गम की तरह मानवीय जीवन में शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि पांच प्रकार की बुद्धियों का आदि मूल है । (**पञ्चबुद्ध्यादिमूलाम्**) जैसे किसी नदी में भंवर या आवर्त होते हैं, वैसे जीवन-नदी में शब्द, रूप, रस, गन्ध और स्पर्श जैसे आकर्षण या विषय ही भंवर के तुल्य हैं। (**पञ्चावर्त्ताम्**) नदी के वेग के समान जन्म दुःख, मृत्यु दुःख, बुढ़ापे का दुःख, रोग का दुःख और गर्भ के दुःख रूपी वेग हैं (**पञ्च दुःखौघवेगाम्**) ये जीवन में बाढ़ के तुल्य हैं । जैसे नदी को पार करने के लिए पचासों प्रकार या उपाय हो सकते हैं, उसी प्रकार ऋषि का परामर्श है कि जीवन नदी को पार करने के लिए विभिन्न तोड़ों भेदों को जानने के लिए सम्यक् अध्ययन करना चाहिए । (**पञ्चाशद्भेदां पञ्चपर्वामधीमः**) सब का जीवन-दाता, सब का पालक, सब को धारण करने वाला वह विराट् ब्रह्मचक्र में जीव रूपी हंस कोई घुमा रहा है, जो व्यक्ति अपने को, उस प्रेरक तत्त्व को प्रेम पूर्वक जान लेता है, वह अमृत हो जाता है ।

सृष्टि के कारणों की चर्चा करते हुए ऋषि का निष्कर्ष है- हम ने जो कुछ स्तवन किया, वह परम ब्रह्म का ही गुणानुवाद है । उस परम ब्रह्म में ईश्वर जीव तथा प्रकृति ये प्रधान तत्त्व हैं, जो उन तीनों का भेद रहस्य जान लेता है, वह ब्रह्म में लीन होकर जन्म-मरण के चक्र से उन्मुक्त हो जाता है ।

उद्गीतमेतत्परमं तु ब्रह्म तस्मिंस्त्रयं सुप्रतिष्ठाक्षरम् । अत्रान्तरं ब्रह्मविदो विदित्वा लीना ब्रह्मणि तत्परा योनिमुक्ताः ॥७॥

ऋषि सृष्टि के तीन तत्त्व बतलाते हैं-१. ईश्वर, २. जीव और ३. प्रकृति । इन तीन तत्त्वों में से प्रकृति क्षरति दूसरी अवस्था को प्राप्त करती है और न बदलने वाली है । प्रकृति व्यक्त है और अव्यक्त भी। इस क्षर-व्यक्त और अक्षर-अव्यक्त रूप प्रकृति विश्व को परमात्मा धारण करता है । जीवात्मा शुभाशुभ कर्मों का भोक्ता है, यह जीवात्मा शुभ-अशुभ कर्मों के भोग में लिप्त होकर संसार के बन्धनों में फंस

जाता है । जब वह संसार में रमण करने के स्थान पर परमात्मदेव को जान लेता है, तब सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है । मन्त्र इस प्रकार है–

संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरं च व्यक्ताव्यक्तं च भरते विश्वमीशः ।
अनीशश्चात्मा बध्यते भोक्तृभावाज्ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः ॥८॥

अगले तीन छन्दों द्वारा पूर्वोक्त स्थापना को पुष्ट करते हुए ऋषि वर्णन करते हैं–यहां दो अज–अजन्मा ज्ञ+अज्ञौ द्वौ अजौ–एक सर्वज्ञ, परमात्मा है, दूसरा अल्पज्ञ–अजन्मा–असमर्थ जीवात्मा है, तीसरी–'अजा हि एका' अनादि प्रकृति है, जीवात्मा भोक्ता है, इन तीनों में एक अनन्त, विश्वरूप, प्रकृति का भोग न करने वाला अकर्ता परमात्मा है । जब ज्ञानी इन तीनों तत्त्वों के वास्तविक स्वरूप को जान लेता है । तब वह ब्रह्म के यथार्थ स्वरूप को भी जान लेता है ।

ज्ञाज्ञौ द्वावजावीशानीशावजा ह्येका भोक्तृभोग्यार्थयुक्ता ।
अनन्ताश्चात्मा विश्वरूपो ह्यकर्त्ता त्रयं यदा विन्दते ब्रह्ममेतत् ॥९॥

तात्पर्य यह है ब्रह्मज्ञानी श्वेताश्वतर के ऋषि सृष्टि–चक्र के १. ईश्वर २. जीव और ३. प्रकृति तीन कारण मानते हैं, इन में परमात्म देव को जान कर संसार के अविद्या क्लेश आदि सब बन्धन खत्म हो जाते हैं । सब अविद्याओं की निवृत्ति होती है ।

क्षरं प्रधानममृताक्षरं हरः क्षरात्मानावीशते देव एकः ।
तस्याभिध्यानाद्योजनात्तत्त्वभावाद् भूयश्चान्ते विश्वमायानिवृत्तिः॥१०॥

परमात्मदेव को भली प्रकार जानने से अविद्या, क्लेश आदि सब बन्धन समाप्त हो जाते हैं, उनके छूट जाने से जन्म–मृत्यु चक्र से छुट्टी मिल जाती है । इसे जान लेने के बाद वह जीव, प्रकृति और ब्रह्म से भिन्न एक देह शरीर से पृथक् तीसरी पूर्णतया स्वच्छ अनुभूति करने लगता है । सम्बन्धित मन्त्र यह है–

ज्ञात्वा देवं सर्वपाशापहानिः क्षीणैः क्लेशैर्जन्म मृत्युप्रहाणिः।
तस्याभिध्यानात्तृतीयं देहभेदे विश्वैश्वर्यं केवल आप्तकामः ॥११॥

उस परमात्म देव को जानने से वह परमात्मदेव कहीं और नहीं, अपने आभ्यन्तर में ही अवस्थित है, यह जानने के बाद कुछ और जानने योग्य नहीं रहता । जीवात्मा भोक्ता है, प्रकृति भोग्य है और तीसरा प्रेरक–नियन्ता प्रेरिता परमात्मा है । ब्रह्म के विषय में जो तीन बातें कही हैं, मेरे लिए ब्रह्म का यही वास्तविक स्वरूप है । उपसंहार सम्बन्धी मन्त्र यह है–

एतज्ज्ञेयं नित्यमेवात्मसंस्थं नातः परं वेदितव्यं हि किञ्चित्।
भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत् ॥१२॥

जैसे अग्नि काष्ठ लकड़ी आदि में उपस्थित है, परन्तु उसका

उज्ज्वल स्वरूप दिखाई नहीं देता, किन्तु जब काष्ठ रगड़ते हैं और काष्ठ का जो स्वरूप दिखाई देता है, वह भी अग्नि का चिह्न है । दो काष्ठों के निर्मन्थन से वह अग्नि जिस प्रकार ग्रहण की जाती है, उसी प्रकार हमारे देह में विद्यमान परन्तु न दीखने वाले अमूर्त्त ओङ्कार को जप रूपी अरणि की रगड़ से साक्षात् धारण किया जा सकता है।

वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्त्तिर्न दृश्यते नैव च लिङ्गनाशः । स भूय एवेन्धनयोनिगृह्यस्तद्वोभयं वै प्रणवेन देहे ॥१३॥

अगली ऋचा में इसे अधिक स्पष्ट करते हुए कहा गया है। अपने देह को नीचे की ओर ओङ्कार को उत्तर की अरणि बनाकर जिज्ञासु ध्यान रूपी मन्थन से छिपे हुए निगूढ़ परमात्मदेव ओङ्कार का दर्शन करे ।

स्वदेहमरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिम् ।
ध्याननिर्मथनाभ्यासाद्देवं पश्येन्निगूढवत् ॥१४॥

जैसे तिलों में तेल है, पर वह पेलने से मिल सकता है, दही में घृत है, पर वह बिलोने से मिल सकता है, स्रोतों में जल, अरणियों में अग्नि विद्यमान रहता है, इसी प्रकार आत्मा में परमात्मा को ग्रहण किया जा सकता है, हां उसे सत्य और तपश्चर्या की रगड़ से साक्षात् किया जाना चाहिए ।

तिलेषु तैलं दधनीव सर्पिरापः स्रोतस्स्वरणीषु चाग्निः । एवमात्मात्मनि गृह्यतेऽसौ सत्येनैनं तपसा योऽनुपश्यति ॥१५॥

जैसे दूध में घृत व्याप्त रहता है, तपश्चर्या सत्य से परमात्म तत्त्व को देख लेते हैं, विना तप के आत्म विद्या का ग्रहण नहीं हो सकता, जैसे तिलों में तेल, दूध में घी, स्रोतों में जल, अरणि में अग्नि उपस्थित है, जैसे उन्हें विशिष्ट साधनों, माध्यम से प्रयत्नपूर्वक प्राप्त किया जा सकता है उसी प्रकार अन्तर में अवस्थित परमात्मा को सत्य, तप, ध्यान द्वारा साक्षात् अनुभूति हो सकती है । उपनिषत्कार कहते हैं यही ब्रह्मोपनिषद् है ।

सर्वव्यापिनमात्मानं क्षीरे सर्पिरिवार्पितम् । आत्मविद्यातपोमूलं तद् ब्रह्मोपनिषत्परं तद् ब्रह्मोपनिषत्परम् ॥१६॥

इस दूसरे अध्याय के पहले पांच मन्त्र यजुर्वेद के ग्यारहवें अध्याय के पहले पांच मन्त्र हैं । सच्ची तपश्चर्या वाले योग की साधना मन के निग्रह से सम्भव है । इन्द्रियों का प्रेरक होने से जीवात्मा सविता है । उसे चाहिए पहले मन को वश में करे, मन का नियन्त्रण होने पर ज्ञान बढ़ेगा और योगी अपने हृदयाकाश में परमात्म तत्त्व का ज्ञान कर सकता है ।

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः । अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत् ॥२।१॥

दुष्प्रवृत्तियों से मन को हटाकर ज्ञान-यज्ञ के लिए प्रवृत्त हुआ मानव अभीष्ट सुख को प्राप्त कर सकता है, किन्तु मन के स्थिर हुए बिना यह सम्भव नहीं ।

युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे सुवर्गेयाय शक्त्या ॥२॥

जिस प्रकार उदय होता हुआ सूर्य अपनी प्रेरक शक्ति द्वारा सब प्राणियों को जगा कर उन्हें कार्यों में प्रेरित करता है । जो चिन्तन द्वारा मन और इन्द्रियों का नियन्त्रण कर आनन्द स्वरूपा ज्योति बढ़ाना चाहते हैं, कृपालु परमात्मा उन्हें सहायता देकर कृतकृत्य करते हैं ।

युक्त्वाय सविता देवान् स्वर्यतो धिया दिवम् । बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान् ॥३॥

योग यज्ञ के होताओं को अपने मन-बुद्धि को समाहित करके अत्यन्त भक्तिभाव से परमात्मा की स्तुति करनी चाहिए ।

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः। विहोत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥४॥

परम कृपालु परमात्मा शरण के अभिलाषी भक्तों को जो योगविद्या से उसकी शरण में जाते हैं और सच्चे हृदय से उसकी उपासना करते हैं । मन्त्र इस प्रकार है–

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः विश्लोक एतु पथ्येव सूरेः । शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः ॥५॥

योगी जानते हैं देह में मूलाधार स्थान पर प्राण को नियन्त्रित कर अनेक साधनों द्वारा ज्ञानाग्नि का उद्दीपन कर यम-नियमादि सहित प्राणायाम के अभ्यास द्वारा भोगवृत्ति के त्याग से मन शुद्ध समाहित स्थित होता है । सम्बन्धित मन्त्र देखिए–

अग्निर्यत्राभिमथ्यते वायुर्यत्राभियुज्यते ।
सोमो यत्रातिरिच्यते तत्र सञ्जायते मनः ॥६॥

जो पुरुष भोग से उदासीन होकर ज्ञान के साधनों से मूलाधार-सुषुम्णा को जोड़ कर शारीरिक सूर्य-चन्द्र को एकत्र कर शुद्ध समाधिस्थ एकाग्र मन से ब्रह्म की उपासना कर उसी की शरण में जाता है । आसक्ति छोड़ देने से कर्मानुष्ठान करने पर भी वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पा जाता है ।

सवित्रा प्रसवेन जुषेत ब्रह्म पूर्व्यम् ।
तत्र योनिं कृण्वसे न हि ते पूर्वमक्षिपत् ॥७॥

मनुष्य जैसे तैरते हुए अपना सिर, ग्रीवा और छाती को उन्नत रखता है, इसी प्रकार प्राणायाम के समय इन तीनों को उन्नत तान कर **'त्रिरुन्नतं समं शरीरं स्थाप्य'** और शरीर के शेष भाग को सम अवस्था

में रखकर **समं शरीरम्** तथा चक्षु आदि इन्द्रियों को मन की रुकावट से रोक कर (**हृदि इन्द्रियाणि मनसा संनिवेश्य**) मन को हृदय में निविष्ट कर प्रबल वेग से ब्रह्म वाली नदियों के समान विषयों में उलझने वाली इन्द्रियों ओ३म् के जप और ब्रह्मरूपी नौका में सवार होकर न्याय रूपी भयानक भवरों स्रोतों को पार कर जाता है । **प्रतरेत विद्वान् स्रोतांसि सर्वाणि भयावहानि ।**

प्राणायाम की विधि स्पष्ट करते हुए कहा गया—उक्त स्थिति में बैठते हुए सांस को अन्दर खींचना चाहिए, परन्तु जब प्राण आकर्षित करने में कठिनाई जान पड़े तब नासिका के छिद्र के माध्यम से उसे बाहर निकाल दे । (**प्राणान् प्रपीड्य इह संयुक्तचेष्टः क्षीणे प्राणे नासिकया उच्छ्वसीत ।**) जिस प्रकार रथ के दुष्ट घोड़े को सारथि नियन्त्रण में करता है, उसी प्रकार ज्ञानी व्यक्ति इड़ा को अन्दर खींच, पिंगला से बाहर कर इन्द्रियों का ठीक नियन्त्रण करता है । **दुष्टाश्वयुक्तमिव वाहमेनं विद्वान्मनो धारयेताप्रमत्तः ।**

योगाभ्यास के लिए व्यक्ति प्राणायाम ऐसे स्थान पर करे जो ऊंचा-नीचा न होकर सम स्तर का हो, शुद्ध, पवित्र हो, जहां पत्थर की बजरी न चुभे, अग्नि का ताप परेशान न करे, रेत उड़ कर शरीर में न लगता हो, जहां तीखा कठोर शब्द सुनाई न देता हो, जहां पानी की सीलन न हो । (**समे शुचौ शर्करावह्निबालुकाविवर्जिते शब्दजलाश्रयादिभिः ।**) और जहां सांप, भेड़िए आदि का खतरा भी न हो, जहां कोई प्रतिकूल वस्तु दिखाई न पड़ती हो, एकान्त हो, जहां तेज वायु न चले, ऐसे मन के अनुकूल वातावरण में योगाभ्यास करना चाहिए। **मनोऽनुकूले न तु चक्षुपीडने गुहानिवाताश्रयणे प्रयोजयेत् ॥**

प्राणायाम के द्वारा जब योगी ब्रह्म का ध्यान करता है, तब उसे कुहरा, धूल, सूर्य, वायु, अग्नि, जुगनू, बिजली, स्फटिक, चन्द्रमा आदि के स्वरूप ज्योतियां सी दिखाई देती हैं । (**नीहारधूमार्कानिलानलानां खद्योतविद्युत्फटिकशशीनाम् । एतानि रूपाणि पुरःसराणि ब्रह्मण्यभिव्यक्तिकराणि योगे ।**)

जब योगी पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश इन पञ्चात्मक महाभूतों को अपने नियन्त्रण में कर लेता है तब उसके योगाग्नि से संयुक्त हुए तेजोमय शरीर को न रोग, न बुढ़ापा और न दुःख होता है । **पृथ्व्याप्तेजोऽनिलखे समुत्थिते पञ्चात्मके योगगुणे प्रवृत्ते । न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम् ।**

योग के फलस्वरूप योगी का देह हल्का, नीरोग, निर्लोभ, सुन्दर, मधुर, गम्भीर ध्वनि प्राप्त कर लेता है । (**लघुत्वमारोग्यमलोलुपत्वं वर्णप्रसादं स्वरसौष्ठवं च ।**) उसके शरीर से शुभ गन्ध आता है, उसके

मूत्र-पुरीष न्यून हो जाते हैं, योग ध्यान में मग्न प्रवृत्त व्यक्ति में ये प्रथम चिह्न दिखाई देते हैं । (**गन्धः शुभो मूत्रपुरीषमल्पं योगप्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति ।**)

जैसे मिट्टी से सना सुवर्णादि पिण्ड धोने से तेजोमय होकर चमकने लगता है । (**यथैव बिम्बं मृदयोपलिप्तं तेजोमयं भ्राजते तत्सुधातम् ।**) इसी प्रकार योगाभ्यासी जीवात्मा देह से पृथक् आत्म तत्त्व अपना स्वरूप जान कर शोक से शून्य हो जाता है । (**तद्वाऽत्मतत्त्वं प्रसमीक्ष्य देही एकः कृतार्थो भवते वीतशोकः ।**)

जिस प्रकार एक दीए की ज्योति से दूसरे पदार्थ देखे जा सकते हैं, उसी प्रकार एक योगाभ्यासी आत्मतत्त्व के प्रकाश से ब्रह्मतत्त्व देख लेता है । (**यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं दीपोपमेनेह युक्तः प्रपश्येत् ।**) आंख आदि इन्द्रियों से ब्रह्म तत्त्व के दर्शन सम्भव नहीं हैं, परन्तु जीवात्मा का आत्मतत्त्व उन अजन्मा, शाश्वत सब तत्त्वों से सर्वाधिक शुद्ध ब्रह्म की अनुभूति से सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है । (**अजं ध्रुवं सर्व-तत्त्वैर्विशुद्धं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः ।**)

वह परमात्म तत्त्व सब दिशाओं, प्रदिशाओं में व्याप्त है, वही सृष्टि के प्रारम्भ में, वही सृष्टि के मध्य में, वही सृष्टि के अन्त में वही है । अगले कल्पों में जो व्यवस्था होगी, यह भी वही है । (**एषो ह देवः प्रदिशोऽनुसर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः ।**) यही है, वह जो सब के आभ्यन्तर में अन्तर्यामी के रूप में प्रतिष्ठित है । वह मुक्त आत्मतत्त्व जीव परमात्म तत्त्व की स्तुति करता है । (**स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनांस्तिष्ठति सर्वतो मुखः ।**)

वह मुक्त आत्मतत्त्व जीव परमात्म तत्त्व-परमात्मा की स्तुति कर कहता है । जो परमात्म तत्त्व अग्नि में है, जो जल में है, जो सम्पूर्ण भुवन में सर्वत्र व्याप्त है । (**यो देवो अग्नौ यो अप्सु विश्वं भुवनमाविवेश**) जो औषधियों वनस्पतियों में सर्वत्र व्याप्त है, उस परम परमात्म तत्त्व परमात्मा को हम पुनः पुनः नमस्कार करते हैं । (**य ओषधीषु यो वनस्पतिषु तस्मै देवाय नमो नमः।**)

जिस प्रकार जाल में फंसी मछलियां निकलना चाहती हुई भी निकल नहीं पातीं, वे जाल वाले की इच्छा पर निर्भर होती हैं, इसी प्रकार परमात्मा की व्यवस्था के नियमबद्ध जाल में कर्मानुकूल बंधे हुए प्राणी संसार रूपी जाल से छूटने के लिए विशेष उद्योग कर ही बन्धन मुक्त हो सकते हैं । वे स्तुति करते हैं—सृष्टि, स्थिति प्रलय रूपी तीन कार्यों को करने के कारण परमेश्वर के ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, तीन पृथक् देव न होकर वह सब का अन्तर्यामी सर्वाधीश परमेश्वर है, उसी की उपासना उचित है । सम्बद्ध मन्त्र देखिए—

एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य इमांल्लोकानीशत ईशनीभिः। प्रत्यङ् जनांस्तिष्ठति सञ्चुकोपान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः ॥२॥

वह परमेश्वर सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् सर्वत्र देखता (**विश्वतश्चक्षुः**) और जो सर्वत्र सम्मुख है। (**उत विश्वतोमुखः**) जो सर्वत्र संरचना शक्ति वाला है। (**विश्वतो बाहुः**) जो सर्वत्र स्थिति वाला है, (**विश्वतस्पात्**) वह अकेला प्रकाशवान् और अप्रकाशित लोकों को अपने रचना-सामर्थ्य से अच्छे प्रकार से उत्पन्न करता हुआ प्राणों से अनुप्राणित करता है। (**संबाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।**) अग्नि, वायु आदि सब दिव्य शक्तियों का प्रभव और उद्भव करने वाला वही है। (**यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च।**) वह विश्व का स्वामी है, वह रुद्र रूप महर्षि है, (**विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः**)। वह सृष्टि रचना से पूर्व तेजस्वी सूर्य आदि को अपने अन्दर रखने वाला ब्रह्माण्ड का निर्माण करने वाला जगदीश्वर हमें सुमति दे। (**हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु।**) परमात्मा दुष्टों को रुलाने के कारण रुद्र हैं, वह भक्तों के लिए कल्याणकारी हैं, अपने भक्तों पर कृपादृष्टि करते हैं, वेदवाणियों के अनुवर्त्तियों को सुख देते हैं, सर्वाधीश परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना से हृदय में शुद्ध ज्ञान का प्रकाश बढ़ता है। वह परमेश्वर सब कालों में मुक्त और शुद्ध है, उसी के ज्ञान से मुमुक्षु मुक्ति पाते हैं। (**विश्वस्यैकं परिवेष्टितारमीशं तं ज्ञात्वाऽमृताः भवन्ति।**)

इस उपनिषत् के तीसरे अध्याय का ८ वां मन्त्र ही यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय का अठारहवां मन्त्र है। जिज्ञासु कहता है—मैं उस महान् पूर्ण प्रकाश स्वरूप परमात्मा को जानता हूं, वह आदित्य की तरह प्रकाश स्वरूप है, वह अन्धकार से दूर रहता है, उसी को जान कर मृत्यु को पार किया जा सकता है। सम्बन्धित मन्त्र यह है—

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥

जिज्ञासु स्वीकार करता है मृत्यु से छूटने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है। उससे परे कुछ नहीं है, न इस ओर है, उससे न कुछ सूक्ष्मतर है और न बृहत्तर है (**यस्मात् परं न अपरम् अस्ति किञ्चिद् यस्मात् न अणीयः न ज्यायः अस्ति किञ्चित्।**) उससे अधिक सूक्ष्म और उससे बड़ा कुछ नहीं है, उस परमात्म तत्त्व से ही इस ब्रह्माण्ड का अणु-अणु व्याप्त है। (**तेन इदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्।**) वह इस कार्यजगत् से परे कारण प्रकृति से भी परे रूप, रोग, दुःख आदि से रहित है, (**ततः यद् उत्तरतरम् अरूपम् अनामयम्।**) जो भगवान् के

व्यक्त तथा अव्यक्त सम्पूर्ण स्वरूप का साक्षात् कर लेते हैं, वे दुःख रहित होकर अमर हो जाते हैं जो परमात्म देव के इस पूर्ण स्वरूप को नहीं जान पाते, वे संसार में दुःख ही दुःख भोगते हैं । (**य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे दुःखमेवापि यन्ति ।**)

इस ब्रह्माण्ड में जितने मुख, शिर, ग्रीवा सम्बन्धिनी देखने, सोचने और निगलने की शक्ति है । (**सर्वाननशिरोग्रीवः**), वही सब प्राणियों के हृदयरूपी गुहा में उपस्थित है । (**सर्वभूतगुहाशयः**) वह सर्वव्यापक है, वह भगवान् है, वह सब में व्याप्त हो रहा है, इसलिए सर्वगत है, वही सब का कल्याण कर सकता है (**सर्वव्यापी स भगवान् तस्मात्सर्वगतः शिवः।**) मुमुक्षु अन्तर गुहा में परमात्म तत्त्व का साक्षात् करता हुआ कह उठता है—अहो यही महान् आत्मा है, सर्वस्वामी, पूर्ण सत्त्वगुणयुक्त, अन्तःकरण का मुख्य प्रवर्तक, अविनाशी, ज्योतिस्वरूप, पाप रहित, निर्मल मुक्ति देने वाला है उसी की कृपा से मुक्ति मिलेगी।

उस सर्वव्यापक परमात्म देव की हृदय देश में अंगुष्ठ मात्र अनुभूति सम्भव है । (**अंगुष्ठमात्रः पुरुषः अन्तरात्मा**) वह सब प्राणियों के हृदयों में संनिविष्ट है, उसे हृदय की गुहा में मन की स्वामिनी बुद्धि तथा संकल्प-विकल्प वाले मन से एकाग्र चित्त से जान सकते हैं । (**सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः । हृदा मनीशो मनसाऽभिक्लृप्तो एतद् विदुः ।**) जो उस परमात्म देव का साक्षात् कर लेते हैं, वे अमर हो जाते हैं । (**ते अमृताः भवन्ति ।**)

उस परमात्म देव के अनन्त सिर हैं, अनन्त आंखें हैं, उसके अनन्त पांव हैं, वह पूर्ण है, वह ब्रह्माण्ड को चारों ओर से आवृत करके, दसों अंगुलियों को लांघकर वर्तमान है । सम्बद्ध मन्त्र इस प्रकार है—

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

वह परमात्मा वर्तमान, भूतकाल और भविष्यत् काल में एक रस है, वह सब प्राणियों और मोक्ष का स्वामी है । वह अन्नादि आहार की अपेक्षा नहीं रखता, वह कुछ न खाता हुआ भी सब को देखता है । तीसरे अध्याय का पन्द्रहवां मन्त्र ऋग्यजुर्वेदों के पुरुष सूक्तों में दूसरा मन्त्र है ।

उस सर्वव्यापक परमात्म देव के हाथ-पैर सब जगह हैं, उसकी आंखें, सिर, मुख सब जगह हैं, ब्रह्माण्ड में सर्वत्र उसके श्रोत्र हैं । (**सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतः अक्षिशिरः मुखम् सर्वतः श्रुतिमत् लोके।**) वह सब को घेर कर स्थिर है । (**सर्वमावृत्य तिष्ठति।**)

यद्यपि उस परमात्म देव में सब इन्द्रियों के गुण ओत-प्रोत हैं तथापि वह सभी इन्द्रियों से रहित है । (**सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रिय-**

विवर्जितम्) वह परमात्मदेव सब प्राणियों का प्रभु है, वह स्वामी है, वह सब को आश्रय देने वाला है, वह सब की अन्तिम शरण है। **(सर्वस्य प्रभुमीशानं सर्वस्य शरणं बृहत्।)**

इस शरीर रूपी राजधानी में बैठा देहान्तर में जाने के स्वभाव वाला हंस नाम देह का स्वामी जीवात्मा उसके सिर में सात और दो नीचे के इन्द्रिय रूपी छिद्र हैं। **(नवद्वारे पुरे देही हंसो लेलायते बहिः।)** देह का स्वामी जीवात्मा आंख, झरोखों से बाहर झांकता हुआ विषयभोग के लालच में इन्द्रियों को लपकाता है। शरीर रूपी नगर में स्नेह के कारण अविद्या से वह बन्धनों में बंध जाता है।

ऋषि स्पष्ट करते हैं—वह परमात्म तत्त्व हाथ-पांव से रहित है, फिर भी गतिशील है, बिना हाथों के वह ग्रहण कर सकता है, नेत्रों के बिना देख सकता है, बिना कानों के सुन सकता है। **(अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।)** जो कुछ भी जानने योग्य है, वह उसे जानता है, परन्तु उसे कोई नहीं जानता, उसी को आद्य महापुरुष कहा जाता है। **(स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम्।)**

वह परमात्म तत्त्व अणु से भी सूक्ष्म है, महान् से महान् है **(अणोः अणीयान् महतः महीयान्)** वह प्रत्येक प्राणी की हृदय रूपी गुहा में अवस्थित है। **(आत्मा गुहायां निहितः अस्य जन्तोः।)** वह कर्त्ता नहीं है, वह अक्रतु है। शोकसागर से पार करने वाला शोक रहित होकर परमात्म देव की महिमा देख लेता है।

शोक आदि से शून्य पुरुषं जिज्ञासु अनुभव करता है मैं उस वार्द्धक्य से शून्य सनातन सब के आभ्यन्तर में निवास करने वाले सर्वव्यापक सर्वत्र उपस्थित अजन्मा आनन्दस्वरूप परमात्मा का हृदय में साक्षात्कार कर लेता हूं। मुझे सन्तोष है कि मैंने ज्ञातव्य को जान लिया। सम्बन्धित मन्त्र यह है--

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात्।
जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनोऽभिवदन्ति नित्यम् ॥२१॥

सृष्टि के तीन अनादि तत्त्व और परमात्म देव

श्वेताश्वतर उपनिषद् के ऋषि तीन अनादि तत्त्व मानते हैं। जो परमेश्वर किसी की सहायता न लेकर स्थावर जंगम रूप इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय ही सहज रूप में कर लेता है। वही सर्वोपरि सब का स्वामी है। मानव को अपने कल्याण के लिए उसी की प्रार्थना करनी चाहिए। वह एक है, अद्वितीय है, एक होते हुए अनेक वस्तुओं का निर्माण करता है, वह परमात्म देव ही अन्त में संहार करता है,

वह परमात्म देव हमें शुभ-बुद्धियों से संयुक्त करे। (**देवः स नः बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु।**)

वही परमात्म देव अग्नि है, वही आदित्य है, वही वायु और चन्द्रमा है, वही शुक्र और ब्रह्म है, वही जल और प्रजापति है। सम्बद्ध मन्त्र यह है–

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद् वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥२॥

हे परमात्मन् सब को उत्पन्न करने में तुम्हीं नारी हो, तुम ही नर हो, तुम ही कुंआरे और कुमारी हो। (**त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी**) तुम सदा वृद्ध, बहुद्रष्टा, बहुश्रुत सर्वोपरि अनुभवी होते हुए दण्ड द्वारा प्राणियों की रक्षा करते हुए तुम ही अपने कर्मों द्वारा सब के हृदय में प्रकट हुए साक्षात् देखने वाले हो। (**त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः।**) उड़नशील काला, भूरा, हरे, लाल नेत्रों वाले तोते आदि पक्षी तडित् नामक विद्युत् वाले मेघ, वसन्त आदि ऋतु, समुद्र (**नीलः पतङ्गो हरितो लोहिताक्ष-स्तडिद्गर्भ ऋतवः समुद्राः।**) इन सभी पृथ्वी आदि तत्त्वों में परमेश्वर उन उन के ही रूप में व्याप्त है, वह अतिसूक्ष्म और व्यापक होने से ही अनन्त सृष्टि का उत्पादक है। (**अनादिस्त्वं विभुत्वेन वर्त्तसे यतो जातानि भुवनानि विश्वा।**)

सृष्टि के तीनों तत्त्व अज अजन्मा हैं–जीव तथा परमात्मा अज अजन्मा हैं, प्रकृति स्त्रीलिंगी होने से अजा-अजन्मा है, सतो गुण, रजो गुण और तमो गुण की सम अवस्था ही प्रकृति है। इस प्रकृति का स्वरूप लाल, सफेद, काला, लोहित शुक्ल, कृष्ण रूप है। (**अजाम् एकाम् लोहितशुक्लकृष्णाम्**) वह प्रकृति अपने जैसे अनेक पदार्थों का सृजन कर रही है, उसे दूसरा अज-अजन्मा जीव भोग रहा है। और तीसरा अज अजन्मा परमेश्वर वह प्रकृति का भोग नहीं करता। (**जहाति एनां भुक्तभोगाम् अजः अन्यः।**) दो प्रकार के जीव हैं, पहले प्रकार के जीव प्रकृति के भोग में लगे रहते हैं, दूसरे प्रकार के जीव अपने को प्रकृति से पृथक् रख कर अध्यात्मवादी त्याग का जीवन जीते हैं।

यहां दो सुन्दर पक्षी हैं– वे दोनों, साथ-साथ मित्र भाव से रहते हैं। वे दोनों एक ही वृक्ष का आलिंगन कर रहे हैं, उन दोनों में से एक तो पिप्पल के फल को स्वाद से खा रहा है, दूसरा बिना फल का स्वाद लिये साक्षी रूप से देख रहा है–निर्लेप भाव से निहार रहा है। सम्बन्धित मन्त्र यह है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽअभिचाकशीति ॥६॥

एक ही प्रकृति रूपी वृक्ष पर जीव रूपी पुरुष प्रकृति का उपभोग करता हुआ शक्तिहीन हो जाता है और प्रकृति के मोह में फंस कर शोक-सन्तप्त हो जाता है, पर प्रकृति से पृथक् परमात्म देव की महिमा देख कर भगवान् में भक्ति लगा कर शोक रहित हो जाता है। सम्बद्ध मन्त्र देखिए-

समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नोऽनीशया शोचति मुह्यमानः ।
जुष्टं सदा पश्यत्यन्यमीशमस्य महिमानमिति वीतशोकः ॥

मनुष्य के लिए यही परम धर्म है कि योगाभ्यास आदि द्वारा परमात्मा का चिन्तन करे। परमात्म देव को जानने के लिए वेदों का अध्ययन करे। वेद की सब ऋचाएं उस अक्षर ब्रह्म का ही प्रतिपादन करती हैं, जो उस ब्रह्म को नहीं जानता, वह ऋचाओं का क्या करेगा। जो ब्रह्म को जान जाते हैं, वे सच्ची शान्ति प्राप्त करते हैं। यही मन्त्र ऋग्वेद के पहले मण्डल के १३९ वें सूक्त का ३९वां मन्त्र है।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः ।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ॥८॥

वेदों के छन्द, यज्ञ, ऋतुएं, व्रत, भूत, भव्य और वेद जो कुछ कहते हैं उस सब को परमात्मा ने ही रचा था, वही अब रचता है, भविष्य में वही उसकी रचना करेगा, वही परमात्मा उसमें निर्लेप रहता है। परन्तु जीवात्मा उसमें आकर बंध जाता है। (**तस्मिन् च अन्यः मायया संनिरुद्धः ।**)

माया का अर्थ प्रकृति है और मायी परमेश्वर है। (**मायां तु प्रकृतिं विद्यात् मायिनं तु महेश्वरम् ।**) स्थूल पदार्थ के तुल्य परमेश्वर की प्राप्ति सम्भव नहीं है, जिस एक ईश्वर का सब दिशाओं, देशों और कालों में जिसका यश विस्तीर्ण है, उस परमेश्वर की कोई स्थूल प्रतिमा नहीं है, उस परमात्मा का यश सर्वत्र व्याप्त है। मन्त्र देखिए-

नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये परिजग्रभत् ।
न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः ॥१९॥

उसे चक्षु आंख आदि इन्द्रियों से नहीं देखा जा सकता। (**रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति ।**) परन्तु उस हृदयस्थ को मननशक्ति से जो जानते हैं, वे अमर हो जाते हैं (**हृदा हृदिस्थं मनसा य एनमेवं विदुरमृतास्ते भवन्ति ।**) भक्त परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि भक्त की ओर जो तुम्हारी कृपा-दृष्टि है, उससे मुझ जिज्ञासु मुमुक्षु की नित्य रक्षा करो। (**रुद्र! यत्ते दक्षिणं मुखं तेन मां पाहि नित्यम् ।**) दुष्टों का दमन करने वाले रुद्र, हम आपकी स्तुति करते हैं, आप हमारे पुत्र, पौत्र हमारा अपना जीवन, हमारी गौएं, घोड़े आदि की रक्षा कीजिए, उनकी हिंसा न करें।

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः । वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥२२॥

दो मौलिक ज्ञान और सर्वज्ञ ईश्वर

श्वेताश्वतर उपनिषद् में तत्त्व ज्ञान के पांचवें अध्याय में आत्मज्ञान को विद्या कहा गया है और आत्मा आदि से अतिरिक्त ज्ञान अविद्या कहलाती है । ये दोनों ज्ञान हैं वह सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर विद्या और अविद्या से पृथक् तीसरा है ।

द्वे अक्षरे ब्रह्मपरे त्वनन्ते विद्याऽविद्ये निहिते यत्र गूढे । क्षरन्त्वविद्या ह्यमृतं तु विद्या विद्याऽविद्ये ईशते यस्तु सोऽन्यः ॥१॥

परमात्मा प्रत्येक योनि का अकेला ही अधिष्ठाता है, परमात्मा ही उन्हें ज्ञानेन्द्रियां देकर उन्हें पुष्ट करता है, उनके ज्ञान को पुष्ट करता है, वह सब रूपों, योनियों का साक्षी है । (**सर्वम् एतद् विश्वं अधितिष्ठति एकः गुणान् च सर्वान् विनियोजयेद् यः ।**) वेदों के तत्त्वज्ञान या रहस्य पर प्रकाश डालने वाली उपनिषदों में वह आत्मतत्त्व जाना जा सकता है । जो उस तत्त्व ज्ञान को भली प्रकार जानते हैं, वे दुःखों से मुक्त हो सकेंगे ।

तद्वेद गुह्योपनिषत्सु गूढं तद् ब्रह्मा वेदते ब्रह्मयोनिम् । ये पूर्वं देवा ऋषयश्च तद्विदुस्ते तन्मया अमृता वै बभूवुः ॥६॥

उपनिषत्कार जीवात्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं—जीवात्मा सत्त्वादि प्रकृति के तीन गुणों से समवेत होकर त्रिगुण बन सकता है। अपने कर्मों के अनुसार फल भोगने के लिए नाना योनियों में जाता है । (**त्रिगुणः त्रिवर्त्मा प्राणाधिपः सञ्चरति स्वकर्मभिः ।**) उपनिषत्कार कहते हैं—जीवात्मा अंगुष्ठमात्र है, फिर भी सूर्य के समान है । (**अङ्गुष्ठमात्रः रवितुल्यरूपः**) ऐसे रूप और गुण के साथ उसके संकल्प और अहंकार आ सकते हैं । (**सङ्कल्प-अहङ्कारसमन्वितः ।**) उनमें संकल्प बुद्धि का गुण है तो अहंकार आत्मा का गुण है । (**बुद्धेः गुणेन आत्मगुणेन च एव ।**) इस प्रकार अंगूठे मात्र भौतिक अहंकार के मानसिक गुणों से समवेत सूई की नोक के तुल्य आत्मा से दूसरा कोई नहीं है । (**आरा अग्रमात्र हि अपरः दृष्टः ।**)

उपनिषत्कार द्वारा अंगूठे-अंगुष्ठ शब्द के प्रयोग का तात्पर्य यह है, मानव शरीर में अंगुष्ठ बहुत छोटा भाग है । जीवात्मा की सूक्ष्मता दिखलाते हुए ऋषि कहते हैं यदि बाल को शतधा विभक्त किया जाये और फिर उसके भी सौ भागों की कल्पना की जाए । (**बाल अग्रभागस्य शतधा कल्पितस्य च ।**) उसके दस हजारवें भाग के तुल्य

जीवात्मा है । (**भागः जीवः स विज्ञेयः**) ऐसा सूक्ष्मतम जीवात्मा अनन्त सामर्थ्य वाला है । यह केवल सोचने की बात है ।

ऐसा जीवात्मा स्त्री नहीं, पुरुष नहीं, न वह नपुंसक है । (**नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं नपुंसकः**) वह जिस-जिस शरीर का ग्रहण करता है, उसी शरीर के अनुसार लिंग की दृष्टि से उसका नाम रखा जाता है । (**यच्छरीरमादत्ते तेन तेन स युज्यते ।**) जैसे वर्षा के पानी से घास बढ़ जाती है, उसी प्रकार संकल्प करने से मोह, स्पर्श मोह, दृष्टि मोह आदि जल से आत्मा देही जीवात्मा कर्मों के अच्छे-बुरे कर्मों के चक्र में भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न रूप धारण करता है। (**कर्मानुगान्यनुक्रमेण देही स्थानेषु रूपाण्यभिसम्प्रपद्यते ।**)

मनुष्य पहले संकल्प करता है फिर संकल्प पूरा करने के लिए अपने अच्छे बुरे कर्म करता है, पूर्वकृत संचित कर्मों में गुणों से जीवात्मा सूक्ष्म-स्थूल अनेक स्वरूप धारण करता है । (**स्थूलानि सूक्ष्माणि बहूनि च रूपाणि देही स्वगुणैः वृणोति ।**) जीवात्मा को उसके भूत और वर्तमान गुणों के कारण यथार्थ फल देने वाला कोई अन्य है, वह परमात्मा के अतिरिक्त कौन हो सकता है । (**क्रियागुणैरात्मगुणैश्च तेषां संयोगहेतुरपरोऽपि दृष्टः ।**)

यह ईश्वर का ज्ञान होना ही जीव के दुःख से छूटने का उपाय है, सब जगत् के रचने वाला वह अनादि अनन्त है, इस विश्व का स्रष्टा है । पृथिवी, पानी, तेज, वायु, आकाश आदि रूपों द्वारा सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है । (**अनादि अनन्तं विश्वस्य स्रष्टारम् अनेकरूपं विश्वस्य एकं परिवेष्टितारम् ।**) उस परमात्म देव को जान कर जीवात्मा सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है । (**ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः ।**)

श्रद्धा-भक्ति की भावना से ही, शरीर या घर आदि कोई उसका निवास स्थान नहीं है, भाव और अभाव देने वाला वह कल्याणकारी है । (**भावग्राह्यम् अनीडाख्यं भावाभावकरं शिवम् ।**) वह सम्पूर्ण सौन्दर्ययुक्त सृष्टि का रचयिता है, ईश्वर सर्वत्र है, जो चलते-बैठते, उठते प्रत्येक दशा या स्थान में उसकी महिमा से विश्व में संचालन की अनुभूति करता है । वह उस देव प्रभु की आराधना में देह को आहुति रूप में दे देता है । फिर पिण्ड की इस काया में ब्रह्माण्ड रूपी संसार से कोई मोह नहीं रहता । (**कलासर्गकरं देवं ये विदुस्ते जहुस्तनुम्।**)

यह सृष्टि चक्र और उसका नियामक

श्वेताश्वतर उपनिषत् के प्रारम्भ में ब्रह्मवादी एकत्र होकर विचार विमर्श कर रहे थे । सृष्टि का क्या कारण है— काल, स्वभाव, नियति, यदृच्छा, पंचभूत, योनि, पुरुष और उनका संयोग । अथर्ववेद

में कहा है—काल प्रजा को रचता है और काल ने ही पहले प्रजापति को उत्पन्न किया। (**कालः प्रजा असृजत, कालो अग्रे प्रजापतिम्।**) कई विद्वान् कहते हैं कि सृष्टि का कारण स्वभाव है। (**स्वभावम् एके कवयः वदन्ति।**) कई दूसरे भ्रम में पड़े हुए कहते हैं सृष्टि का कारण काल है। (**कालं तथा अन्ये परिमुह्यमानाः।**) परन्तु यह शाश्वत सत्य है कि यह तो उस परमात्म देव की महिमा है, जिससे यह ब्रह्मचक्र चलाया जा रहा है। (**देवस्य एष महिमा येन इदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम्।**)

वह सृष्टि का नियामक ब्रह्म कैसा है ? उपनिषत्कार कहते हैं वह ऐसा है, जिससे सारी सृष्टि आच्छादित है। (**येन आवृतं नित्यं इदं हि सर्वम्।**) वह सब कुछ जानता है, वह काल का भी स्रष्टा है। वह दया, ज्ञान आदि गुणों का स्वामी है, वह सभी विद्याओं का ज्ञाता है। (**कालकरः गुणी सर्वविद् यः।**) ऐसे नियामक सृष्टि के रचयिता परमात्म देव के अनुशासन में सृष्टि की सम्पूर्ण कार्य-प्रणाली प्रचलित है। पृथिवी, जल, अग्नि, वायु आकाश आदि तत्त्व सृष्टि का स्वतः संचालन कर रहे हैं। यह बात ठीक नहीं है। (**तेन ईशितं कर्म विवर्तते ह पृथिवी अप् तेज अनिल खानि चिन्त्यम्।**)

उपनिषत्कार बतलाते हैं—सृष्टि का आदि कारण ब्रह्म सृष्टि रूपी कर्म कर निवृत्त हो जाता है, सृष्टि-चक्र चलता रहे, वह तत्त्व का तत्त्व के साथ संयोग कर देता है। (**तत् कर्म कृत्वा विनिवर्त्य भूयः तत्त्वस्य तत्त्वेन समेत्य योगम्।**) काल, स्वभाव, नियति, यदृच्छा, भूत-योनि, संयोग, आत्मा आदि आठ तत्त्वों में से एक, दो, तीन या आठ तत्त्वों के संयोग से ब्रह्म सृष्टि-चक्र का निर्माण संचालन करता है। (**एकेन द्वाभ्यां त्रिभिः अष्टभिः वा।**) जीवित प्राणी जब कार्य करने का अधिकारी है तो वह राग-द्वेषादि दोषों से रहित शुभ कर्म करे तो कृतकर्म के नष्ट हो जाने पर सृष्टि रचना के आठों तत्त्वों से पृथक् हो जाता है। (**कृतकर्म अभावे कर्मक्षये याति स तत्त्वतः अन्यः।**) वह परमात्मा सब संयोग निमित्त का आदि कारण है। वह तीनों कालों का द्रष्टा, वही विश्वरूप, सब की स्तुति-प्रार्थना करने योग्य है। (**य आदिः संयोगनिमित्तहेतुः त्रिकालादकलोऽपि दृष्टः। तं विश्वरूपं स्वचित्तस्थं देवं पूर्वमुपास्य।**) सब प्रकार की बनावटों से शून्य होने के कारण ईश्वर अतीन्द्रिय है, इसीलिए उसे ध्यान योगाभ्यास द्वारा सूक्ष्म शुद्ध बुद्धि से देखा जा सकता है। वह ईश्वरों का परम महेश्वर है। वह देवों का परमदेव है, वह स्वामियों का परम स्वामी है। प्रजापति आदि प्रजारक्षकों का भी वह परम रक्षक है, भुवनों का स्वामी है। ऐसे भुवनों के स्वामी परमात्म देव को हमें जानना चाहिए। मन्त्र देखिए—

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवतानां परमं च दैवतम् । पतिं पतीनां परमं परस्ताद्विदाम देवं भुवनेशमीड्यम् ॥

उस परमात्म देव के समान कोई दूसरा नहीं है, न उससे कोई बड़ा ही है । (**न तस्य समः च अत्यधिकः च दृश्यते ।**) उसकी परम शक्ति है, उसमें ज्ञान, बल, क्रिया तीनों स्वाभाविक शक्तियां हैं । (**परा अस्य शक्तिः विविधा एव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च।**) लोक में उसका कोई स्वामी नहीं है, उससे कोई अधिक ऐश्वर्य वाला भी नहीं है, उसका अपना कोई चिह्न भी नहीं है । (**न तस्य कश्चित् पतिः अस्ति लोके न च ईशिता न तस्य लिङ्गम् ।**) जिज्ञासु साधक परमात्म देव की स्तुति, उपासना, प्रार्थना करे । उसे समझ लेना चाहिए परम परमात्म तत्त्व भगवान् एक है । वह सब प्राणियों में सूक्ष्म रूप से व्यापक है, वह सब प्राणियों के कर्मों का फल देने के कारण कर्माध्यक्ष है, वह सब के शुभाशुभ कर्मों को सर्वत्र देखता है, सब का प्रेरक, केवल वही है, सत्त्व, रज, तम तीनों गुणों से शून्य है । मन्त्र देखिए–

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा । कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ॥

वह नित्यों का नित्य है, चेतनों का चेतन है । (**नित्यः नित्यानाम् चेतनः च चेतनानाम् ।**) यह जीवात्मा उस परमात्म देव को जानकर सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है । (**ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः ।**)

वहां न सूर्य चमकता है, न चन्द्रमा और तारों का वहां प्रकाश है, वहां बिजली की चकाचौंध भी नहीं चमकती, फिर अग्नि का प्रकाश कैसे, वह तो स्वतः प्रकाश है । उसी के प्रकाश से सूर्य, चन्द्र, तारे, विद्युत्, अग्नि को ज्योति प्रकाश मिलता है, उसी की ज्योति से सब प्रकाशमान हो रहे हैं । मन्त्र यह है–

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः । तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥१४॥

इस अनन्त ब्रह्माण्ड के मध्य अविद्यादि अन्धकार से सर्वथा पृथक् रहने वाला सर्वोपरि एक ही परमात्मा है, वह प्रलय की सूक्ष्मावस्था में, जल में अग्नि के समान प्रवेश करके रहता है । उसी को जान कर जीवात्मा मृत्युरूप ग्राह के भय से बच सकता है । उस परम पद या स्थान को प्राप्त करने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है । मन्त्र का मनन करें–

एको हंसः भुवनस्यास्य मध्ये स एवाग्निः सलिले सन्निविष्टः। तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥१५॥

अत्यन्त प्राचीन काल में वेदों के सिद्धान्त रूप उपनिषदों के तत्त्वज्ञान के परम ज्ञानी ब्रह्मर्षियों ने ईश्वर सम्बन्धी गहन विषय की

व्याख्या की है । इसे अशान्त, पुत्र एवं शिष्यहीन व्यक्ति सरलता से समझ नहीं सकेंगे । (**वेदान्ते परमं गुह्यं पुरा कल्पे प्रचोदितम् । नाप्रशान्ताय दातव्यं नापुत्रायाशिष्याय वा पुनः ।**) जिनकी परमात्मा में परम भक्ति श्रद्धा हो, ईश्वर के तुल्य गुरु में भक्ति हो । (**यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ।**) ऐसे ईश्वर-गुरु के प्रति आस्था रखने वाले भक्त के हृदय को प्रकाशित करने के लिए श्वेताश्वतर महर्षि ने यह तत्त्व ज्ञान प्रस्तुत किया है । (**तस्यै ते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः प्रकाशन्ते महात्मनः ।**)

—अभ्युदय, बी-२२,
गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-४९

'वेदप्रकाश' पत्रिका सम्बन्धी घोषणा

फार्म - ४

१. प्रकाशन का स्थान	:	४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६
२. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३. मुद्रक का नाम	:	अजय प्रिंटर्स
४. क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
५. मुद्रक का पता	:	अजय प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली
६. प्रकाशक का नाम	:	अजयकुमार
७. क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
८. प्रकाशक का पता	:	४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६
९. सम्पादक का नाम	:	अजयकुमार
१०. क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
११. सम्पादक का पता	:	ई-३०६ ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली
१२. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	अजयकुमार ई-३०६ ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

मैं अजयकुमार एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये हुए विवरण सत्य हैं ।

—अजयकुमार प्रकाशक

हमारे प्रकाशन

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

आनन्द गायत्री कथा	१४.००
एक ही रास्ता	१२.००
शंकर और दयानन्द	८.००
मानव जीवन-गाथा	१३.००
सत्यनारायण व्रत कथा	६.००
भक्त और भगवान	१२.००
उपनिषदों का सन्देश	१८.००
घोर घने जंगल में	२२.००
मानव और मानवता	३२.००
प्रभु मिलन की राह	२०.००
यह धन किसका है ?	२२.००
बोध-कथाएँ	१८.००
दो रास्ते	१७.००
दुनिया में रहना किस तरह	१७.००
तत्त्वज्ञान	२२.००
प्रभु-दर्शन	१७.००
प्रभु-भक्ति	१२.००
महामन्त्र	१४.००
सुखी गृहस्थ	७.००
त्यागमयी देवियाँ	९.००

MAHATMA ANAND SWAMI

Anand Gayatri Katha	30.00
The Only Way	30.00
Bodh Kathayen	40.00
How To Lead Life?	30.00

महर्षि दयानन्द

व्यवहारभानु	४.००
स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश	१.५०
आर्योद्देश्यरत्नमाला	१.५०
पंचमहायज्ञ विधिः	८.००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

सत्यार्थ प्रकाश	१२५.००
महाभारतम् (तीन खण्ड)	६००.००
वाल्मीकि रामायण	१७५.००
षड्दर्शनम्	१५०.००
चाणक्यनीति दर्पण	६०.००
विदुरनीतिः (हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)	४०.००
ब्रह्मचर्य गौरव	९.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	९.००
कुछ करो कुछ बनो	१२.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१२.००
आदर्श परिवार	१५.००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	२५.००
वैदिक विवाह पद्धति	८.००
ऋग्वेद सूक्ति सुधा	२५.००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	१५.००
सामवेद सूक्ति सुधा	१२.००
ऋग्वेद शतकम्	१०.००
यजुर्वेद शतकम्	१०.००
सामवेद शतकम्	१०.००
अथर्ववेद शतकम्	१०.००
भक्ति संगीत शतकम्	६.००
चमत्कारी औषधियाँ	१५.००
घरेलू औषधियाँ	१५.००
चतुर्वेद शतकम् (सजिल्द)	५०.००
स्वर्ण पथ	१२.००
प्रभात-वन्दन	८.००
प्रार्थना-प्रकाश	८.००
शिवसंकल्प	८.००
प्रार्थना लोक (सजिल्द)	४०.००
वेद सौरभ	१२.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

न्यायदर्शन भाष्य	१५०.००
वैशेषिकदर्शन भाष्य	१५०.००
सांख्यदर्शन भाष्य	१२५.००
योगदर्शन भाष्य	१००.००
वेदान्तदर्शन भाष्य (ब्रह्मसूत्र)	१८०.००
मीमांसादर्शन का विद्योदय भाष्य	३५०.००
सांख्यदर्शन का इतिहास	२५०.००
सांख्य सिद्धान्त	२००.००
वेदान्तदर्शन का इतिहास	२००.००
प्राचीन सांख्य सन्दर्भ	१००.००
वीर तरंगिणी (लेखों का संग्रह)	२५०.००

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

दीप्तिः	८०.००
आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे	४०.००
सृष्टि विज्ञान और विकासवाद	४०.००
वेद मीमांसा	प्रेस में

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

शतपथ ब्राह्मण (तीन खण्ड)	प्रेस में
सन्ध्या : क्या, क्यों, कैसे	१५.००
विवाह और विवाहित जीवन	१८.००
जीवात्मा	४०.००
भगवत् कथा	१२.००

प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

ब्रह्मचर्य सन्देश	२५.००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	१५०.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक ज्ञान-धारा	८०.००
महात्मा हंसराज	६०.००
महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (१ जि.)	२४०.००
आर्य सूक्ति सुधा	१२.००

प्रो. नित्यानन्द पटेल

पूर्व और पश्चिम	३५.००
सन्ध्या विनय	६.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

बिखरे मोती	४०.००
कल्याण मार्ग का पथिक	प्रेस में
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (११ खण्डों में)	६६०.००
आर्य समाज के बीस बलिदानी	१५..००
श्याम जी कृष्ण वर्मा	२४.००
आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय	२५.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा	१०.००
वैदिक धर्म	२५.००

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

ईश्वर का स्वरूप	प्रेस में
सहेलियों की वार्ता	२०.००

लेः देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय
अनुः पं. घासीराम

महर्षि दयानन्द चरित	२५०.००

क्षितीश वेदालंकार

चयनिका	१२५.००

पं. रामनाथ वेदालंकार

वैदिक मधुवृष्टि	६०.००

आ. प्रियव्रत वेदवाचस्पति

वेदोद्यान के चुने हुए फूल	५०.००

पं. चन्द्रभानु सिद्धान्ताभूषण

महाभारत सूक्ति सुधा	४०.००

पं. जगन्नाथ पथिक

सन्ध्या योग ब्रह्म साक्षात्कार	१२५.००

पं. विश्वनाथ विद्यालंकार

सन्ध्या रहस्य	२५.००

प्रो. रामविचार एम.ए.

आर्य समाज का कायाकल्प कैसे हो ?	४.००

पं. नन्दलाल वानप्रस्थी

गीत सागर	२५.००

आ. उदयवीर शास्त्री

आचार्य शंकर का काल १०.००

पं. वीरसेन वेदश्रमी

याज्ञिक आचार संहिता ४५.००

वैदिक सम्पदा १७५.००

नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रेरक बोध कथाएँ १५.००

कवि कस्तूरचन्द

ओंकार गायत्री शतकम् ३.००

पं. सत्यपाल विद्यालंकार

श्रीमद्भगवद्गीता १५.००

WORKS OF SVAMI SATYA PRAKASH SARASVATI

Founders of Sciences in Ancient India (Two Vols.) 800.00

Coinage in Ancient India (Two Vols.) 600.00

Geometry in Ancient India 350.00

Brahmgupta and His Works 350.00

The Critical, Cultural Study of Satapath Brahman In Press

Speeches, Writings and Addresses

Vol.I : VINCITVERITAS 150.00

Vol.II : ARYA SAMAJ : A RENAISSANCE 150.00

Vol.III : DAYANAND : A PHILOSOPHER 150.00

Vol. IV : THREE LIFE HAZARDS 150.00

कर्म काण्ड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका ४.००

पंचयज्ञ प्रकाशिका ८.००

वैदिक संध्या १.००

सामाजिक पद्धतियाँ (मदनजीत आर्य) १२.००

संध्या-हवन-दर्पण (उर्दू) ८.००

Vedic Prayer in press

पं. वा. विष्णुदयाल (मॉरीशस)

वेद भगवान बोले १५.००

जीवनी

महात्मा आनन्द स्वामी (उर्दू) १०.००

महात्मा आनन्द स्वामी (हिन्दी) २५.००

त्रिलोकचन्द विशारद

महर्षि दयानन्द ५.००

गुरु विरजानन्द ५.००

स्वामी श्रद्धानन्द ५.००

धर्मवीर पं. लेखराम ५.००

मुनिवर पं. गुरुदत्त ५.००

स्वामी दर्शनानन्द ५.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

महात्मा हंसराज ४.५०

स्वामी स्वतन्त्रानन्द ४.५०

महात्मा नारायण स्वामी ५.५०

देवतास्वरूप भाई परमानन्द ५.५०

सुनील शर्मा

हमारे बालनायक ८.००

देश के दुलारे ९.००

हमारे कर्णधार ८.००

गिरती दीवारें १२.००

नीरू शर्मा

आदर्श महिलाएँ १०.००

पहली हार पहली जीत १२.००

स्वामी दर्शनानन्द

कथा पच्चीसी ९.००

बाल शिक्षा २.५०

डॉ. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

वैदिक राष्ट्रीय ऋचाएँ १२.००

हरिशचन्द्र विद्यालंकार

वैदिक शिष्टाचार	३.००

पं. रामगोपाल विद्यालंकार

दयानन्द चित्रावली	२५.००

ब्र. नन्दकिशोर

आचार्य गौरव	५.००

पं. नारायण स्वामी

प्राणायाम विधि	२.५०

सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.

नैतिक शिक्षा—प्रथम	२.५०
नैतिक शिक्षा—द्वितीय	३.००
नैतिक शिक्षा—तृतीय	४.५०
नैतिक शिक्षा—चतुर्थ	५.५०
नैतिक शिक्षा—पंचम	५.५०
नैतिक शिक्षा—षष्ठ	६.००
नैतिक शिक्षा—सप्तम	६.००
नैतिक शिक्षा—अष्टम	६.००
नैतिक शिक्षा—नवम	९.००
नैतिक शिक्षा—दशम	९.००

डॉ. मनोहर लाल

जीने का सही ढंग	१२.००

डॉ. देवव्रत आचार्य

योग शिक्षा-१	१२.००
योग शिक्षा-२	१०.००
योग शिक्षा-३	१०.००
योग शिक्षा-४	१०.००

चित्र

स्वामी दयानन्द १६" X २२" बहुरंगी	४.००
स्वामी दयानन्द (कुर्सी) १८" X २२"	३.००
स्वामी दयानन्द (आसन) १८" X २२"	३.००
स्वामी श्रद्धानन्द १८" X २२" एक रंग	३.००
गुरु विरजानन्द १८" X २२" एक रंग	३.००
पण्डित लेखराम १८" X २२" एक रंग	३.००
स्वामी दर्शनानन्द १८" X २२" एक रंग	३.००
गुरुदत्त विद्यार्थी १८" X २२" एक रंग	३.००
महात्मा हंसराज १८" X २२" एक रंग	३.००

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको उपलब्ध हों तो पुड़िया आदि की क्या जरूरत है।

घर का वैद्य—प्याज	७.००
घर का वैद्य—लहसुन	७.००
घर का वैद्य—गन्ना	७.००
घर का वैद्य—नीम	७.००
घर का वैद्य—सिरस	७.००
घर का वैद्य—तुलसी	७.००
घर का वैद्य—आँवला	७.००
घर का वैद्य—नींबू	७.००
घर का वैद्य—पीपल	७.००
घर का वैद्य—आक	७.००
घर का वैद्य—गाजर	७.००
घर का वैद्य—मूली	७.००
घर का वैद्य—अदरक	७.००
घर का वैद्य—हल्दी	७.००
घर का वैद्य—बरगद	७.००
घर का वैद्य—दूध-घी	७.००
घर का वैद्य—दही-मट्ठा	७.००
घर का वैद्य—हींग	७.००
घर का वैद्य—नमक	७.००
घर का वैद्य—बेल	७.००
घर का वैद्य—शहद	७.००
घर का वैद्य—फिटकरी	७.००
घर का वैद्य—साग-भाजी	७.००
घर का वैद्य—अनाज	७.००
घर का वैद्य—फल-फूल	७.००
घर का वैद्य—धूप-पानी	१५.००

सभी छब्बीस पुस्तकें छः आकर्षक जिल्दों में भी उपलब्ध, कीमत ४५.०० रुपये प्रत्येक

घर का वैद्य (प्याज, लहसुन, गन्ना, नीम, सिरस)	
घर का वैद्य (तुलसी, आँवला, नींबू, पीपल, आक)	
घर का वैद्य (गाजर, मूली अदरक, हल्दी, बरगद)	
घर का वैद्य (दूध-घी, दही-मट्ठा, हींग, नमक, बेल)	
घर का वैद्य (शहद, अनाज, साग-भाजी, फल-फूल, फिटकरी)	
घर का वैद्य—धूप-पानी	४०.००

अन्य प्रकाशन

डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

आर्य समाज का इतिहास (भाग १)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग २)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ३)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ४)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ५)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ६)	३२५.००
प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग	५६.००
दक्षिणी-पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति	५८.००
पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया का आधुनिक इतिहास	७७.००
प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन	७२.००
मध्य एशिया व चीन में भारतीय संस्कृति	५८.००
प्राचीन भारत	८०.००
भारतीय संस्कृति का विकास	७७.००
प्राचीन भारत की शासन संस्थाएँ और राजनीतिक विचार	५८.००
एशिया का आधुनिक इतिहास	१३०.००
यूरोप का इतिहास	१४०.००
समाजशास्त्र	८०.००
चाणक्य	६५.००
मौर्य साम्राज्य का इतिहास	१३५.००
भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास	५८.००
भारत का इतिहास	५५.००
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ	१७५.००
मध्यकालीन भारत	५८.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास	३२५.००
Political Thought of Swami Dayanand	150.00

डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

एकादशोपनिषद्	१२५.००
उपनिषद् प्रकाश	११०.००
श्रीमद्भगवद्गीता	१०५.००
संस्कार चन्द्रिका	१२०.००
बुढ़ापे से जवानी की ओर	९५.००
होमियोपैथिक चिकित्सा	१२५.००
होमियोपैथिक चित्रण	१२५.००
होमियोपैथी का क ख ग	१००.००
होमियोपैथी के मूल सिद्धान्त	८०.००
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	४०.००
From old age to youth through Yoga	80.00
चतुर्वेद गंगालहरी	९५.००
मेरी नानी की कहानी	३५.००
माँ और बच्चा	२५.००

चूमपति एम.ए.

योगेश्वर कृष्ण	४०.००
वैदिक स्वर्ग	३०.००
वैदिक दर्शन	१५.००
अनादि तत्त्व	२५.००
विचार वाटिका (भाग दो)	१००.००

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

अग्निहोत्र सर्वस्व	१०.००
उपहार सर्वस्व	५.००
मृत्युञ्जय सर्वस्व	१०.००
स्वाध्याय सर्वस्व	१२.००
उपनयन सर्वस्व	१०.००
दो पुटन के बीच	८.००
ए लविंग टोकन	५.००

पं. शिवकुमार शास्त्री

श्रुति सौरभ	६०.००

स्वामी योगेश्वरानन्द

बहिरंग योग	७०.००
आत्मविज्ञान	८०.००
ब्रह्मविज्ञान	१००.००
दिव्य ज्योति विज्ञान	६०.००
प्राण विज्ञान	५०.००
दिव्य शब्द विज्ञान	६०.००
निर्गुण ब्रह्म	३०.००
व्याख्यानमाला (५ भाग)	१५०.००
हिमालय का योगी-I+II	१५५.००
First Step to Higher Yoga	70.00
Science of Soul	80.00
Science of Divinity	100.00
Science of Divine Light	65.00
Science of Vital Force	40.00
The Essential Colourlessness of the Absolute	40.00
Science of Divine Sound	40.00
Beads of Sermons	30.00
Himalaya Ka Yogi-I+II	160.00

डॉ. कपिल देव द्विवेदी

सुखी जीवन	१८.००
सुखी गृहस्थ	१२.५०
सुखी परिवार	१८.००
आचार शिक्षा	१०.००
नीति शिक्षा	१०.००
वेदों में नारी	२०.००
सुखी समाज	१८.००
वैदिक मनोविज्ञान	१८.००
यजुर्वेद सुभाषितावली	२५.००
सामवेद सुभाषितावली	२५.००
अथर्ववेद सुभाषितावली	३५.००
ऋग्वेद सुभाषितावली	४०.००
वेदों में आयुर्वेद	९०.००
Vedic Samdhya & Agnihotra	30.00
The Essence of The Vedas	200.00

महर्षि दयानन्द

Light of Truth	125.00
Aryoudeshya Ratanmala	10.00
सत्यार्थ प्रकाश	५०.००
संस्कार विधि	१०.००
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	४०.००
उपदेश मञ्जरी	१०.००
संस्कृत वाक्य प्रबोध	५.००
महर्षि दयानन्द (पं. लेखराम)	१००.००
महर्षि दयानन्द के सर्वश्रेष्ठ भाषण	५०.००

पं. भगवद्दत्त

सविता देवता	५८.००
बृहस्पति देवता	६५.००

पं. रामनाथ वेदालंकार

सामवेद (पूर्व. उत्तरार्ध)	४००.००
सामवेद (संस्कृत भाष्य) (दो भाग)	७००.००
आर्ष ज्योति	५०.००
वेद मञ्जरी	५०.००
वैदिक नारी	४०.००

आचार्य अभयदेव वेदालंकार

वैदिक उपदेशमाला	१०.००
वैदिक विनय	१२५.००

स्वामी समर्पणानन्द

पञ्चयज्ञप्रकाश	१५.००
श्रीमद्भगवद्गीता	२०.००

पं. सुरेन्द्र कुमार

विशुद्ध मनुस्मृति	८०.००
मनुस्मृति	१८०.००

Svami Satya Prakash Sarasvati

Rigveda (13 vols)	2700.00
Athervaveda (5 vols)	1125.00
Samveda (2 vols)	1150.00
Yajurveda (1 vol)	500.00

स्वामी जगदीश्वरानन्द

देवर्षि दयानन्द चरित	२५.००
शुक्र नीतिसार	८०.००
सामवेद भाष्य	१००.००
बाल शिक्षा	६.००

नये प्रकाशन

ON THE VEDAS ***by Swami Vidyanand Saraswati.***

This small book is intended to enable the general reader to have an idea of the VEDAS without going through the voluminous work, published on the subject. **Price Rs. 35.00**

योग शिक्षा (४ भाग) : *डॉ० देवव्रत आचार्य ।* यह चार पुस्तकें छात्र-छात्राओं की शारीरिक अवस्था और मानसिक परिस्थिति के अनुसार उन्हें योग का मार्ग-दर्शन करेंगी तथा उनमें नैतिक मूल्यों का विकास होगा, मानसिक तनाव दूर होगा, उत्साह और आनन्द मिलेगा । **मूल्य : ४२.०० रु०**

वैदिक राष्ट्रीय ऋचाएं : *डॉ० कृष्णवल्लभ पालीवाल ।* वेद समस्त ज्ञान का भण्डार है । प्रस्तुत पुस्तक में एक सौ पचास मन्त्रों द्वारा वैदिक राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रभक्ति की एकांकी प्रस्तुत की गयी है । **मूल्य : १२.०० रु०**

आर्य सूक्ति सुधा : *प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु ।* आर्यसमाज के प्रमुख संन्यासी, महात्माओं, विद्वानों व लेखकों के वाक्य, योग्य वचन तथा सूक्तियों का संग्रह। एक लघु ज्ञान-कोश । आर्य मनीषियों के अमृत-वचनों का यह सुमन-गुच्छ आपके मन को सुवासित करेगा । **मूल्य : १२.०० रु०**

बहुत दिनों बाद प्रकाशित

वैदिक सम्पदा : *पं० वीरसेन वेदश्रमी ।* वेद से मानव जीवन की सब समस्याओं का हल प्राप्त होता है । प्रस्तुत ग्रन्थ में आध्यात्मिक, सामाजिक, वैदिक, पारिवारिक आदर्श, वैदिक गृहस्थवाद, पशु-पक्षी पालन, कृषि, उद्योग-धन्धे, वन एवं यातायात, औषधि से चिकित्सा, रोग-ज्ञान, शल्य-चिकित्सा, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, शिक्षा, विज्ञान, भाषा विज्ञान तथा धर्म से जुड़े हुए सभी पहलुओं पर विचार पूर्वक विवेचन किया गया है । **मूल्य : १७५.०० रु०**

सन्ध्या योग और ब्रह्म साक्षात्कार : *पं० जगन्नाथ पथिक ।* मनुष्य हमेशा 'घृणा' (द्वेष) तथा सुख पाने की 'कामना' (राग) से घिरा रहता है । इन से छुटकारा पाने के लिए वेदों में उन दिव्य साधनों का उपदेश है जिन से क्लेश कर्मों को समूल नष्ट किया जा सकता है । 'वैदिक सन्ध्या' तथा 'अष्टाङ्ग योग-पद्धति' का सतत स्वाध्याय करने पर 'स्वरूप' का दर्शन और 'पुरुषोत्तम' का साक्षात्कार होकर दिव्य 'उन्मुक्त-जीवन' प्राप्त होता है । **मूल्य : १२५.०० रु०**

भगवत् कथा (उपनिषदों के आधार पर) : *पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ।* भारतीय लोक-व्यवहार में कथा-कहानियों का विशेष स्थान है, क्योंकि कहानियां सुनने और पढ़ने में रोचक होती हैं । यह भगवत् कथा रोचक तथा ज्ञानमय कथाओं से भरपूर है । धर्म-प्रेमी जन इससे अवश्य लाभ उठायेंगे । **मूल्य : १२.०० रु०**

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६, फोन : २९१४९४५

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

भूमिकाभास्कर (दो खण्ड)	३००.००
सत्यार्थभास्कर (दो खण्ड)	७००.००
संस्कारभास्कर	१५०.००
तत्त्वमसि	४०.००
आर्यों का आदिदेश और उनकी सभ्यता	५०.००
रामायण : भ्रान्तियां और समाधान	६०.००
वेदार्थभूमिका	२५.००
आर्य सिद्धान्तविमर्श.	२५.००
गौ की गुहार	१५.००
Ishopanishad	45.00
Brahmasutra	300.00
The Riddle of Life & Death	20.00
Vedic Concept of God	50.00

मैक्समूलर

भारत की विश्व को देन	१३०.००

प्रो॰ रामविचार एम॰ ए॰

वेद-सन्देश (दो खण्ड)	१००.००

रमेश मुनि वानप्रस्थ

वैदिक यज्ञानुष्ठानविधिः	८०.००

डॉ॰ देवव्रत आचार्य

आसन प्राणायाम वैज्ञानिक विवेचन एवं चिकित्सा	४०.००

डॉ॰ विद्यासागर अबरोल

मोक्ष-द्वार	२५.००

रामप्रकाश भसीन

मानव जीवन की सफलता के साधन	२०.००
सुखसागर	१५.००

वीर सावरकर साहित्य

१८५८ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर	१३५.००
मेरा आजीवन कारावास	११०.००
काला पानी	६०.००
मोपला (उपन्यास) ऐतिहासिक	१६.००
गोमान्तक (उपन्यास) ऐतिहासिक	१६.००

पी॰ एन॰ ओक

वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास–१	४५.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास–२	४५.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास–३	४५.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास–४	४५.००
आगरा का लालकिला हिन्दू भवन है	३५.००
दिल्ली का लालकिला लालकोट था	३०.००
ताजमहल मन्दिर भवन है	३५.००
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें	४५.००
कौन कहता है अकबर महान् था	५०.००
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय	३०.००

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आर्यसमाज सिद्धान्त और प्रगति	४०.००
The Parables & Dailogues from the Upnishadas	100.00

डॉ॰ भवानीलाल भारतीय

नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द	६०.००
ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी	२०.००
मैंने ऋषि दयानन्द को देखा	१०.००
वैदिक मातृभूमि वंदना	२०.००
वैदिक स्वाध्याय	५०.००

डॉ॰ ओमप्रकाश वेदालंकार

मृत्यु से अमृत की ओर	२०.००
आर्यों का परम धर्म	७.००
नये घर के दो पंछी	१७.००
अपने आपको कैसे पढ़ें	१७.००

ब्र॰ नन्दकिशोर

मातृगौरव	५.००
सत्संगगौरव	९.००
पितृगौरव	३०.००
विद्यागौरव	३०.००

प्रकाशक-मुद्रक अजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिण्टर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया ।